चमकने वाली सभी वस्तुएं सोना नहीं हैं

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

जो चमकता है ऐसी हर वस्तुएं सोना नहीं होती। चमक—दमक सभी धातुओं में होती हैं किन्तु हर वस्तु सोना नहीं कहलाती। परीक्षण करने के बाद खरा और खोटा का ज्ञान होता है। आज मिलावट का युग है। ऐसी—ऐसी धातुएं बनाई गई हैं जिनकी चमक ऑरिजनल वस्तु की चमक से कई गुना अधिक होती है। व्यावहारिक जीवन में यदि इस कहावत को लागू करें तो इसका अर्थ यह है कि हमें नकली लोगों से सावधान रहना चाहिएं। गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है कि इस संसार में भांति—भांति के लोग रहते हैं। लोगों की पहचान करके मित्रता या शत्रुता करनी चाहिए। हमें ऐसे मित्र बनाने चाहिए जो सुख—दुःख में साथ रहें। ऐसे मित्र नहीं बनाने चाहिए जो समय आने पर धोखा देकर के अलग हो जायें। नकली वस्तु को असली नहीं बनाया जा सकता। अनेक धातुएं चमकती हैं। सबका गुण धर्म अलग—अलग है। सोना भी चमकता है और पीतल भी किन्तु सोने की चमक अलग होती है और पीतल की चमक अलग। कोई भी व्यक्ति चमक के आधार पर वस्तुओं का परीक्षण कर लेता है। आज के युग में नकली वस्तुओं को असली से भी आकर्षण युक्त बनाया जा रहा है जिससे मनुष्य आकर्षित होकर खरीद लें और बाद में धोखा खा जाये। बाजार में असली और नकली दोनों वस्तुओं की भरमार है। जो जिस वस्तु को चाहता है वह उस वस्तु को खरीद सकता है। किन्तु कभी—कभी दुकानदार ग्राहक को असली वस्तु दिखाकर नकली वस्तु दे देता है। जिससे ग्राहक ठगा जाता है। नकली वस्तु में तड़क भड़क अधिक रहता है। उसमें आंतरिक गुण नहीं रहता। इसी को ढ़ोल के अन्दर पोल भी कहा जा सकता है। दुर्जन और सज्जन के भेद को असली और नकली की तरह ही समझना चाहिए। दुर्जन व्यक्ति की मित्रता पहले बहुत प्रगाढ़ होती है, किन्तु जैसे—जैसे एक—दूसरे के गुण धर्म से परिचित होते हैं वैसे—वैसे वह मित्रता भी टूट जाती है। दुर्जन व्यक्ति अपने दुर्जनता को अवश्य दिखलाता है। जब तक पहचान नहीं होती तभी तक मित्रता रहती है। पहचान होने पर मित्रता टूट जाती है। सज्जन व्यक्ति की मित्रता पहले कम और बाद में प्रगाढ़ होती जाती हैं। दुर्जन व्यक्ति की मित्रता बनावटी होती है।

बनावटी वस्तु मिलावटी होती है। मिलावट अधिक दिनों तक नहीं टिक सकती। वहां झूंठ, कपट, धोखेबाजी और असत्यता का साम्राज्य रहता है। सज्जनता शुद्धता है। शुद्धता स्थाई रहती है। स्वर्ण से बनी हुई वस्तुएं आदि से अंत तक एकसमान रहती हैं। किन्तु मिलावटी वस्तुएं पहले तो खूब चमकती है किन्तु धीरे—धीरे उनकी चमक नष्ट हो जाती है और उसे अंत में फेंकना ही पड़ता है। बगुला हंस की चाल अधिक दिनों तक नहीं चल सकता। कौआ कोयल की तरह नहीं बोल सकता। असली और नकली की पहचान एक दिन

तो हो ही जाती है। बनावटी फूलों से सुगन्ध नहीं आ सकती। बनावटी फूल देखने में आकर्षक हो सकता है, किन्तु उसमें गुणवत्ता नहीं रहती। सुगन्ध वास्तविक फूलों से ही प्राप्त होती है। इसलिए बनावट और कृत्रिमता में नहीं बल्कि स्वाभाविकता में विश्वास करना चाहिए। दीपक घोर अंधकार को दूर कर प्रकाश कर देता है। सरस्वती ज्ञान की देवी है। ज्ञान के लिए सरस्वती की आराधना की जाती है। सरस्वती की प्रसन्नता से लोगों को ज्ञान प्राप्त होता है। दीपक को प्रज्जवलित करके सरस्वती की पूजा की जाती हैं और प्रार्थना की जाती हैं कि जीवन को ज्योतिर्मय कर दो। ज्ञान दूसरे को प्रकाशित करता है। मानव को स्वपर प्रकाशक होना चाहिए। तीन तरह की चेतना है– स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ की चेतना। जियो और जीने दो की भावना परार्थ की चेतना से सम्बन्धित है। स्वार्थ की चेतना अपने और अपने परीवार तक सीमित रहती है। परमार्थ की चेतना ज्योतिर्मय ज्ञान है। ज्योतिर्मय जीवन के लिए मानव को संयमी होना चाहिए। संयमः खलु जीवनम् अर्थात् जीवन में संयम का बहुत बड़ा महत्व है। इससे जीवन की ज्योति जगमगाती है। प्राणिमात्र के प्रति संयम की भावना रखना अहिंसा है। अहिंसा जीवन का सबसे बड़ा सूत्र है।

मानव के सामने दो जगत हैं– लौकिक जगत और आध्यात्मिक जगत। लौकिक जगत् पांच इन्द्रियों का जगत है। इस जगत में सभी प्राणी रहते है और अपनी चेतना का विकास करते हैं। कुछ प्राणी ऐसे होते हैं जो इस लौकिक जगत से परे आध्यात्मिक जगत का चिंतन करते हैं और अपनी आत्मा का विकास करते हैं। आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है। आध्यात्मिकता के ही कारण भारत को विश्वगुरु का दर्जा प्राप्त है। प्राच्य और पाश्चात्य संस्कृतियों के मेल से जो संक्रमण आया भौतिक समृद्धि उसी का परिणाम है। हमारे देश में सर्वप्रथम आत्मचिंतन हुआ। हम कौन हैं? कहां से आये हैं? मरने के बाद यहां से आत्मा कहां जाती है। आत्मा का अस्तित्व है या नहीं इन सब विषयों पर भारतीय वाङ्मय में गम्भीर चिंतन हुआ है। भारतीय चिंतकों ने भौतिक समृद्धि को अधिक महत्व नहीं दिया। उनके विचार में धन नश्वर है। आज है कल नहीं रहेगा। इसलिए ऐसी सम्पदा को प्राप्त किया जाये जिसका अस्तित्व त्रिकाल में वर्तमान रहता है। इसलिए भारतीय शास्त्र वेत्ताओं ने अपने चिंतन के केन्द्र में आत्मा को रखा। भौतिक सम्पत्ति विनश्वर है और आध्यत्मिक सम्पत्ति शाश्वत। जीवन की समग्र समस्याओं का स्वरूप और समाधान समझने के लिए हमें उसके दोनों पक्षों को समझना आवश्यक है। अच्छे और बुरे की पहचान समय आने पर होती है। अतः अच्छे लोगों के साथ ही मैत्री भाव रखना चाहिए।